शब्द अपने

आशीषानुकंपा

शताब्दी देशनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज

कृतिकार

श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर जी

प्रकाशक

समर्पण समूह

जैनं वचनं सदा वंदे

आशीषानुकंपा :
शताब्दी देशनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज
प्रणेताः श्रुतप्रिय श्रमण 108 अप्रमितसागर जी
संपादक : श्रुतसंवेगी श्रमण 108 आदित्यसागर जी
सहयोग : सहजानंदी श्रमण 108 सहजसागर जी
कृति का नाम : शब्द अपने
संस्करणः प्रथम -3000/2023
प्रकाशक : समर्पण समूह, भारत
प्राप्ति स्थान :
भोपाल : 91790-50222
जबलपुर : 98276-07171
इन्दौर : 98260-10104
इन्दौर : 94253-16840
भीलवाड़ा : 63766-49881

आकल्पन एवं मुद्रण :
डीसेन्ट ग्राफिक्स, इंदौर
मो.: 98260-14047

शुभाशीष

भारत भूमि अनादिकाल से श्रमण-संस्कृति एवं दिगम्बर वीतरागी श्रमणों की पदरज से पावन है। इसी भूमि पर तीर्थंकर भगवन्तों ने जन्म लिया तथा इसी पर श्रीराम आदि बलभद्रों ने जन्म लिया और स्व-पर का कल्याण मार्ग प्रशस्त किया है।

महान् - महान् साहित्य रचनाओं का बहुमान भी भारत भूमि को प्राप्त है। ''सम्प्रति में भी साहित्य सृजन चल रहा है। साहित्य वही श्रेष्ठ है, जो पाठक एवं लेखक दोनों के हितार्थ हो।''

अन्तेवासी मुनिश्री अप्रमितसागर जी ने अपनी आत्म-साधना के क्षणों को निकालकर **''शब्द अपने''** कृति का सृजन किया है, आपकी श्रुताराधना एवं आत्म-साधना को देखकर जन-जन का हृदय मुदित है, आप इसी प्रकार श्रीजिनशासन जिन भारती की आराधना करते रहें, यही शुभाशीष...।

पावन वर्षायोग
बड़ौत (उ.प्र.) भारत
23 अगस्त 2023

-श्रमणाचार्य विशुद्धसागर

मेरे शब्द

शब्द अपने नीति परख हों तो वे ही शब्द सुखप्रद हो जाते हैं और अनीति परख हों तो दुःखप्रद हो जाते हैं क्योंकि कहा जाता है -

''एकमपि नीति बीजं बहुफलतामेति यस्य तव''

अर्थात् नीति वाक्य रुपी एक बीज भी मानव जीवन में अनेकों शुभ फलों को प्राप्त कराता है। नीतिकार कहते हैं - यदि नीति के संस्कार अपने भीतर न हों तो आपमें और मूक प्राणियों में शारीरिक अंतर के अलावा कोई अंतर नहीं है।

आपके भीतर अच्छे संस्कार तब प्रकट होंगे जब आपके अपने शब्दों का चुनाव नीति-रीति परख होगा, क्योंकि मनुष्य की प्रतिष्ठा उसके शब्दों पर टिकी है इसी उद्देश्य को लेकर मैंने **''शब्द अपने''** कृति का सृजन किया है।

इस अनुपम कृति को मेरे आराध्य **प.पू. शताब्दी देशनाचार्य गुरुवर विशुद्धसागर जी यतिराज** का वृहद् आशीर्वाद संप्राप्त हुआ और मेरे अग्रज **श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्य सागर जी महाराज** ने इस कृति को संपादित करके अनुपमता प्रदान की है।

आशा करता हूँ कि यह **''शब्द अपने''** कृति आपको आपके अपनों से और आपको अपने मिलाने का साधकतम साधक अवश्य ही बनेंगी। अंत में यही भावना है कि आप इस कृति को पढ़कर अपने जीवन को नई दिशा प्रदान कर सकेंगे।

॥ विशुद्धात्मने नमः ॥

विशुद्ध ज्ञान वर्षयोग
2023 भीलवाड़ा

विशुद्धगुणानुरागी
श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमित सागर

अपने तक जाने के लिये
हैं ये शब्द अपने
कौन अपने ?
कौन पराये ?
ये भी बतलायेंगे
शब्द अपने
लेकिन
एक सच कहूँ
जिन्हें मान रहे हो
आप अपने,
वे सब हैं सपने
जानो शब्द अपने...

शब्द अपने

मिलते थे हम बहुत लोगों से
अब जरूरत ही नहीं है हमें,
क्योंकि
अपने से मिलने के बाद
फुरसत ही नहीं है हमें...

तुम्हारा जो
हक है मुझ पर
कहीं छीन न लेना
स्वयं मुझ पर शक कर–कर ...

खामोशी बहुत अच्छी है,
कब ?
जब बोलने से संबंध बिगड़ता हो...

शब्द अपने

मुझसे कई ज्यादा कीमत
उसकी हैं,
जिसने मुझे कीमती बनाया है...

शब्द अपने

खामोश न रहकर बोल देना अच्छा है,
कब ?
जब आपस का संबंध सुलझता हो...

स्वार्थ की परिभाषा
तब ही समझ में आती है
जब कोई
अपना ही छोड़कर चला जाता हैं...

शब्द अपने

अपने वक्त पर
इतराओ नहीं,
दूसरे का वक्त आयेगा;
तो पश्चाताना पड़ेगा...

शब्द अपने

अब कहीं और मत तलाशो
परायों को,
वे अपनों के बीच में ही रहा करते हैं...

खुश रहकर
दूसरों को खुश रखना,
क्योंकि
आपको देखकर
बहुत सारे लोग खुश रहते हैं...

हम सावधान रहते हैं
उन परायों से
जो कभी धोखा नहीं देते,
लेकिन
अफसोस तो इस बात का है हमें
जो धोखा देते हैं
उन्हीं के साथ हम दिन-रात रहते हैं...

मैंने उससे दूर जाकर
अच्छा किया,
क्योंकि
दूर जाने पर ही
उसे एहसास होगा कि
मेरी कीमत क्या थी...

शब्द अपने

नाम कराने वाला
और
बदनाम कराने वाला
कोई इंसान नहीं है दुनिया में,
वो तो है केवल
तेरा यशः अयशः कीर्ति कर्म...

भले ही तुम दूर चले जाना,
मगर
याद मुझे ही करोगे ;
क्योंकि
सुख के दिन हो या दुःख के
अपने ही लोग याद आया करते हैं...

शब्द अपने

मान से संबंध टूटता हो,
तो मान को दूर करके
क्षमा धरके
संबंध को बनाये रखना सीखो ...

मुझे तकदीर बदलने की
आवश्यकता नहीं है,
क्योंकि
जिनकी तस्वीर मेरे हृदयांकित है
उनसे ही सारे बिगड़ते हुये
काम संभल जाते हैं ...

कुछ लोग
इस तरह के भी आयेंगे
जिदंगी में,
जो अपने दिखेंगे ;
लेकिन
अपने होंगे कभी भी नहीं...

इक और दर्द दिया गया मुझे
उसके द्वारा ही
जो अपना-सा लगता था मुझे
और
मैं सहता गया,
क्योंकि
अब भी अपना-सा लगता है वह मुझे...

शब्द अपने

अब पता चल चुका है मुझे कि-
अपना भी पराया हो जाता है
जब स्वार्थ पूरा हो जाता है,
इसलिये
अब मैं स्वयं को
अपना मानकर
जीवन बिता रहा हूँ...

शब्द अपने

रिश्तों की कीमत करना
वे ही लोग नहीं जानते हैं
जिन्हें एहसास ही नहीं है कि
एहसास से ही
अज़नबी इंसान भी अपना हो जाता है
और
अपनों से रिश्ता भी मजबूत हो जाता है...

रिश्तों में
मिठास बनाये रखने के लिये
मीठे वचनों का सहारा लेना चाहिये,
क्योंकि
कड़वे वचनों से
अकसर रिश्ते टूट जाया करते हैं...

आप दूरियाँ जरूर रखें,
परन्तु
आपकी अहमियत का एहसास रहना चाहिये ;
क्योंकि
जब दूरियाँ लम्बे समय तक होती हैं
तब आपके अपने
आपके बिना जीना सीख जाते हैं ...

शब्द अपने

जरूरत है
केवल अपनापन जताने की,
पराया भी अपना होता हुआ
नज़र आता है ...

आपने गलत किया
उसे डाँटकर समझाने की कोशिश की
क्योंकि
प्यार से समझाने पर
हर कोई आपकी बात भी मानता है
और
आपका अपना भी बन जाता है...

आज भले ही
ज़माना बदल चुका है
लोग स्वार्थ वश आपका उपयोग करते हैं,
लेकिन
ऐसा जानकर भी
आप हमेशा उनके उपयोग में आया करो ;
क्योंकि
कीमत उसकी ही होती है
जो किसी न किसी के
उपयोग में आ सके...

शब्द अपने

एक बार नहीं अनके बार सोचना
ये कहने से पहले कि-
आपके रहने या न रहने से
मुझे कोई फरक नहीं पड़ता,
क्योंकि
इतनी सी बात कहने से
आपके अपनों को
बहुत फरक पड़ता है...

शब्द अपने

इस अनोखे से ज़माने में
जब कोई आपको गले लगाकर
यूँ कहने लगे कि-
तेरे दर्द से मुझे भी तकलीफ होती है,
तो समझ लेना
कोई खोया हुआ
अपना आपको मिल गया है...

हर बात कहता था मैं उससे
अपना समझकर,
लेकिन
समझ गया हूँ मैं
वो पराया ही था,
जब बात पता चली मुझे
दूसरों के मुख से ...

गहराईयाँ कागज पर
शब्द बनकर तब उतर आती हैं,
जब दर्द देने वाला कोई
अपना ही होता है...

शब्द अपने

आप जीना सीख चुके हैं
इस अज़नबी सी दुनिया में,
तब ही समझियेगा ऐसा
जब कोई आपका अपना
आपको दर्द
और कड़वे बोल बोलकर चला जाये
और
आप उसे देखकर
अच्छे मीठे से बोल बोलकर मुस्कुरा दें...

अपनों के जाने के बाद
तकलीफ तो होती ही है,
लेकिन मेरे दोस्तो !
किस्मत का खेल तो देखो
पास रहकर भी
जब कोई अपना पास न रहे,
उदास रहे ;
तो तकलीफ बहुत होती है...

सभी अपने
तब ही अच्छे हैं,
जब आप अपनों के साथ
खामोश रहकर
हमेशा के लिये
आस-पास रहना सीख लेंगे...

अपनों के साथ रहकर
अच्छे से जीवन जीना सीख लो,
क्योंकि
जाने के बाद
उन्हें ही याद करते हैं,
जिन्होंने उनके साथ
अच्छे से जीवन जीया है...

अपनों की नहीं,
अपनी गलती स्वीकारना सीख लो,
तो अपने, सदा ही अपने रहेंगे..

लाज़वाब है
अपनों से अपनापन,
जो दूर रहकर भी
पास रहने का एहसास दिलाता है...

आज अपनों की जरूरत है मुझे
तो वो
मेरे साथ हो
ये जरुरी नहीं
और
कल अपनों को मेरी जरूरत होगी
तो मैं भी साथ रहूँगा,
ये भी जरूरी नहीं...

शब्द अपने

अपना अपना ही रहता है
पराया पराया ही,
लेकिन
अफसोस तब होता है
जब कोई अपना ही
पराया होने का एहसास देता है...

अपने अपने से लगते हैं,
लेकिन कब तक ?
जब तक आपके सपनों को
पूरा करते रहते हैं...

अब आपको ही सोचना है
आप कैसे शब्दों का चुनाव करते हैं,
क्योंकि
शब्द अपने ही तो हैं ;
जो घाव भी करते हैं
और
घाव भी भरते हैं...

जब परायों से मिलकर
अपना-सा लगने लगे
तो समझ लेना कि-
परायों के बीच में भी
कोई अपना मिल सकता है...

जब शब्द अपने
आपके अपनों से
आपको दूर करने लगें,
तब आप उन शब्दों को
अपनी ज़िंदगी से विदा कर दें
और
अपनों को अपने करीब कर लें...

अपनाओ
हरेक शब्द अपनों का
जिससे अपनापन बढ़ता हो
और
परायापन घटता हो...

उलझनें तब ही आती हैं
आपकी ज़िंदगी में
जब आप अपने शब्दों को
बिना सोचे समझे बोल देते हैं...

शब्द अपने

सारी दुनिया में खोज आना
अपने लिये सभी कुछ न कुछ करते हैं
लेकिन
एक अपना ही है
जो आपके लिये सब कुछ करता है...

शब्द अपने
अपनों को खामोश कर देते हैं,
जब आप शब्दों का प्रयोग
बिना होश में कर देते हैं...

शब्द अपने
अचेतन जरूर होते हैं,
लेकिन
चेतन को रुला भी देते हें
और
हसा भी देते हैं...

अनज़ान शब्दों का
करिश्मा तो देखो,
जान से प्यारे लोग भी
जान लेने पर उतर आते हैं...

शब्द अपने

बहुत जान होती है
अपने शब्दों में,
जो अपनों को पराया
और
परायों को अपना कर देते हैं...

अपनों से रिश्ता टूटने में
समय नहीं लगता,
जब बुरा समय आने पर
कोई अपना
आपसे बात नहीं करता...

शब्द अपने

अपनों से
रिश्ता मजबूत बनाने के लिये,
अपना ख्याल रखने के साथ-साथ
अपनों का ख्याल भी जरूर रखें...

शब्द अपने
अपना बनाने के लिये नहीं,
अपने तक पहुँचाने के लिये लिखना...

जब कोई खामोश हो जाये
तब समझ जाना,
किसी अपने ने ही
उसे दर्द दिया है...

किसी को अपना बनाने के लिये
नहीं करना अपने शब्दों का प्रयोग,
क्योंकि
जो शब्द अपने होते हैं ;
वो अपनों के लिये ही तो होते हैं...

शब्द अपने

बड़े ही गजब के हैं
ये शब्द अपने,
जो पल भर में ही
अपनों को अज़नबी
और
अज़नबियों को अपना बता देते हैं...

अपनी ज़िंदगी में
अपने ही न हों
तो ज़िंदगी, ज़िंदगी नहीं
वीरान सी हो जाती है ;
क्योंकि
अपने ही अपनी ज़िंदगी बनाते हैं
पराये तो उजाड़ने में लगे रहते हैं...

हर वक्त
इंतज़ार रहता है मुझे
उन अपनों का
जो पराये हो चुके हैं,
क्योंकि
मुझे विश्वास है
कभी न कभी तो एहसास होगा उन्हें ;
मेरे अपनेपन का...

शब्द अपने
पहुँचा दें अपने तक,
तो समझ लेना
शब्द अपने हैं...

शब्द अपने

अपने और
अपनों के बीच रहकर
कहीं भूल नहीं जाना
आप अपने को ...

कहकर सबको अपना-अपना
खो दिया आपने ही घर अपना,
इसलिये
जानो कोई नहीं है अपना
सब कुछ है सपना
तब ही पाओगे घर अपना...

आप अपने,
आपके अपने,
नहीं अपने ;
जब तक ऐसा नहीं जाने
तब तक नहीं रहोगे
आप अपने ...

खुश रखना अपनों को
अपने शब्दों से,
क्योंकि
आपके शब्द ही
आपके अपनों को दुःखी कर देते हैं...

शब्द अपने

बचपन में
आपको अपने संभाल लेते हैं
लेकिन
अफसोस तब होता है
जब आपके अपने
पचपन के होते हैं,
तब आप
बचपन की संभाल भूल जाते हैं...

शत्रु भी मित्रवत्
व्यवहार करने लगते हैं
जब आपके शब्द
अपनापन देते हैं...

शब्द अपने

आप कितना ही छिपाकर रखो
अपने गम को मुस्कुराहट के पीछे,
जो अपने होते हैं
वो पहचान ही लेते हैं ...

अपने ही शब्दों के कारण
आप अपनों को खो बैठते हैं,
इसलिये
अपने शब्दों का चुनाव ऐसा करें कि
अपने क्या ?
पराये भी
अपने बनकर साथ रहें...

आज वो पल
याद आ रहा है मुझे,
जब मेरे शब्दों से
कोई अपना दूर हुआ था ;
क्योंकि
आज मैं भी इक अपने से दूर हुआ हूँ ...

शब्द अपने

हर पल मदद दी अपनों ने मुझे,
पर
उनकी मैंने कद्र नहीं की ;
लेकिन
पुनः मदद माँगने गया जब मैं
तब उन्होंने फिर मदद की,
तब असलियत जान सका मैं
अपने, अपने ही होते हैं
पराये, पराये ही...

आप जब कभी भी
अपनों के नज़दीक जाओ
और
वे आपसे नज़र न मिलाये,
तो समझ लेना
आप अपनों की नज़रों से
दूर जा चुके हैं...

शब्द अपने

मेरे दोस्तो !
ज़िदगी का
एक अनूठा सच कहूँ
जिन अपनों के जाने पर
आप आँखों से आँसू बहाते हो,
उन्हें आपके आँसुओं से
कोई मतलब ही नहीं रहता...

अपनों के साथ
अपने बनकर रहने की कला
सभी जानते हैं,
लेकिन
परायों के साथ
अपनों जैसे रहना
कोई विरले ही जानते हैं...

अपनाओ,
एक कठोर सच
जिसे आप अपना मानकर जी रहे हो
वो भी आपका अपना नहीं है...

हमने परायों को भी देखा है,
अपना होते हुये
अपनापन देकर...

शब्द अपने

अपनों को खोने की वजह
केवल एक ही होती है,
जब हम
अपनी गलतियाँ नहीं स्वीकारते हैं...

शब्द अपने
अपनों के साथ पराये भी सुनते हैं,
इसलिये क्यों न
ऐसे शब्दों को बोला जाये
जिससे अपने तो अपने ही रहें
पराये भी अपने हो जायें...

शिकायतें परायों से नहीं
अपनों से ही हुआ करती है,
क्योंकि
अपनों को ही पता रहता है
अपने को किसकी जरूरत है ...

लाख कोशिश कर ले
कोई पराया
अपनों से दूर करने की
लेकिन
आप अपनापन
यूँ ही बरकरार रखना
ताकत नहीं किसी में
अपनों को दूर करने की ...

अगर छल भी लोगे
अपनों के बीच रहकर अपनों को,
मगर
कहलाओगे आप छलिये ही...

जब कोई आपसे
टूट जाये, रूठ जाये ;
तो समझ लेना
उसकी किस्मत फूटी है, रूठी है...

आप कोशिश जरूर करना
परायों को भी अपना बनाने की,
लेकिन
न बनें तो चिंता नहीं करना ;
क्योंकि
उनकी किस्मत में ही नहीं है
आपको अपना बनाने की...

शब्द अपने

एक ही भूल
करते आये हो
जीवन में आज तक
वो यही है
अपनों को ही पहचानते रहे
अपने को पहचाना ही नहीं...

शब्द अपने

मत करना बयान
असलियत अपनों की,
वरना
अपने टूट जायेंगे ...

शब्द अपने कह रहे हैं
कहीं अपने शब्द
अपनों को ही चोट न पहुँचा दें,
इसलिये
सोच समझ कर कहना
शब्द अपने...

शब्द अपने

अपने घर को भूलकर
परायों का ही घर अपनाया,
इस ही लिये तो
आजतक अपने घर नहीं पहुँच पाया...

शब्द अपने
अपनों को खोने के लिये नहीं
अपने में खोने के लिये हों,
तब ही,
शब्द अपने,
अपने हैं...

अपन
अपने लिये करते हैं
अपने,
अपनों के लिये
लेकिन
दोनों में जमीं आसमां का अंतर है
एक में स्वार्थ है
तो दूसरे में सौहार्द है...

शब्द अपने

राज करोगे
अपनों के बीच ही नहीं
परायों के बीच रहकर भी,
जब शब्द अपने
अपना समझकर कहोगे ...

अपनों से उलझना
अपने जीवन में
उलझनें पैदा करना ही है,
क्योंकि
अपने ही तो हैं
जो अपनों की उलझनें सुलझाते हैं...

शब्द अपने

रोज अपनों से बातें करते हो
कभी अपने से भी कर लिया करो,
क्योंकि
अपनों से बातें करने से
संसार बढ़ता है
और
अपने से बात करने से
संसार घटता है ...

अपना कहकर
उसने अपनापन तो जरूर जताया,
लेकिन
वह धोखे में ही था ;
क्योंकि
दगा देने वाला कोई पराया नहीं
अपना सगा ही होता है...

शब्द अपने

अपना लड़का सब कहते हैं
पर
जिस दिन लड़कर चला जाता है
तो समझ आ जाता है
वास्तव में लड़का ही था...

मत कर अपनों को परेशान,
क्योंकि
ऐसा करने से
तेरे अपनों के बीच
तेरी शान गिरती है...

ये राज तो
अपनों को ही पता रहता है,
अपने किन बातों से
नाराज हुआ करते हैं...

जब कोई अपना कहता है
अपना रास्ता बदलकर
आपने अच्छा नहीं किया,
तब एक ही बात कहना
वह रास्ता
आपके कारण ही तो बदला है...

शब्द अपने
अपनों के लिये भी
परायों के लिये भी
अपनों को जानने के लिये भी
अपनों से अपनापन पाने के लिये भी
और
परायों को
अपना बनाने के लिये
सदैव करना...

मैंने जानकर अपनों को
अपना दुःख बयान नहीं किया,
क्योंकि
मैं नहीं चाहता
मेरे कारण कोई अपना दुःखी हो...

आप अपना दुःख
अपनों को बताकर
अपनों को दुःखी करते हो,
क्योंकि
आपकी खुशी देखकर ही तो
वो खुश होते हैं ...

अपना दुःख
अपन ही सहते हैं
अपना कोई भी,
दुःख दूर करने नहीं आता
उसे दूर
अपन को ही करना पड़ता है
खुश रहकर...